२८
४१

कविराजश्रीशुभकर्णयतिना विरचिता.

दादाजी श्री १००८ श्री रत्नप्रभसूरि आदि गुरुवरोंकी बृहत्पूजा और लघुपूजा.

प्रगटकर्ता.

फलौधि नगरवास्तव्य शेठ चान्दमल्लजी बेद का सुपुत्र शेठ जोगराजजी बेद.

संशोधक.

पण्डित त्रिभुवनदास अमरचन्द सलात पालीताना.

यंत्रणे आनन्दमुद्रणालये लल्लुभ्रात्रात्मज-गुलाबचन्द्र-द्वारा मुद्रयित्वा प्रकाशितम्.

वीरसंवत् २४४१ विक्रमसंवत् १९७२

मूल्य दो आना.

प्रत नं० .....
सदर बजार सिरोही

प्रस्तावना.

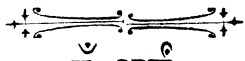

ॐ अर्हं.

॥ अहो भव्यजीवो ? सम्पूर्ण सृष्टि प्रवाहके चलानें वाले उसका हुंडा अवसर्पिणीकालमें देवाधिदेव परमेश्वर वीतराग अर्हन् ऋषभदेव सर्वज्ञ, सर्वदर्शी हुवे। जिनोंनें पुरुषोंकी बहुत्तर कला, स्त्रीयोंका चौसठ कला, शतशिल्पकार, अढारह लिपियां रचै। च्यारवर्ण स्थापित कोये। और चौदह पूर्व द्वादशांगी वाणीकों गुंथने वाले इन्हाके पुण्डरिकजी प्रथमगणधर हुए। इन्हीकी आज्ञासें भरत चक्रवर्ती वैक्रीय लब्धिसें चार मुखवाला चार वेदोंका उच्चारण करता हुवा। और इन्हीके वंशमें तिर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव, वलदेव आदि बडे बडे पुरुष हुए। और इन्हींके वंशमें तेइस वें तिर्थंकर पार्श्वनाथ स्वामी १ तिनके प्रथम गणधर शुभदत्तजी हुवै २ तिनके पाटपे हरदत्तजी हुवै ३ तिनके पाटपे आर्य समुद्रजी हुवै ४ तिनके पाटपे केसीगणधर परदेसी रासतानिक राजाको आदि ले केइ राजाओं को प्रतिबोध देणे वाले और चोइस वे तिर्थंकर महावीर स्वामी तिनके प्रथम गणधर गौतम स्वामीके साथ अधिकार उत्तराध्ययन २३ मे अध्यनमें है। तथा रायपसेणी सूत्रमें हैं। तिनके पाटपे स्वयंप्रभ सूरि हुवै, जिनोंनें श्री श्रीमाल और पोरवाड श्रावक कीये। तिनके पाटपे दादा साहब युगप्रधान भट्टारक रत्नप्रभसूरि जातके विद्याधर हुवै, जिनोंनें ओएस्यां नगरीमें आयके उहडदेव मंत्रीका पुत्र जीवायकर उपलदेव राजाकों प्रतिबोध दे, जैनधर्म स्थापित करके और ओसवाल किये। अठारह गोत्र स्थापे, तिनके नाम ये है–श्रेष्ठ गोत्र वेद–मूंथा १ तातेड २ बाफणा ३ मोराक्ष मकरणां ४ सांखला ५ कर्णावट ६ वलहमोत्र तया एंका वांके रासेठीया ७ कुलहटगोत्र–विरहटगोत्र ८ श्री श्रीमालगोत्र ९ सुचंति–अप-

भ्रंश सदासचेति १० चोरडीया ११ भूरिगोत्र १२ भाद्रगोत्र १३ चींचटगोत्र १४ कुंभटगोत्र १५ कनोजगोत्र १६ डींडुगोत्र सांप्रते कोचर १७ लघुश्रेष्ठिगोत्र १८ ये है। इनमें सें सर्व शाखा फुटी है, ये निश्चय बात है। इसका सारांश कमलागच्छकी बृहत् पटावलीमें है सो देख लेना। इनके पाटपे यक्षदेवसूरि, उपकेश गच्छके धरने वाले यक्षराज मानभद्रकों प्रतिबोध देने वाले हुवे। इनके पाटपे कितने ही अनेक आचार्य युगप्रधान लब्धिसंपन्न विद्यासंपन्न हुवे है। और जिनकी महिमा संपूर्ण भूमन्डल जानता है। और अमेरिकाके चिकागो सेहरमें ६०० विद्वानो अनेक मतके इकठे हुए, जिनोंनें जैनमतकी प्राचीनता आजकलके चालु मतोंसे श्रेष्ठ बताइ है। और यूरोपियन विद्वान डॉक्टर मेक्षमूलर साहेबनें आपने बनाये हुवे धर्म परीक्षाके संस्कृत साहित्यमें जैनधर्मकी बडी भारी तारीफ लिखी है। और कहता है जैनधर्म बडा प्राचीन मत है। जैन शब्द "जि" जये–धातुसें बनता है और यह जैन धर्म पृथ्वी पर रत्नके समान है। इस्के सेवन करनें सें प्राणी भवसमुद्रमें शीघ्र ही पार हो जाता है। अतः—

हे भव्यजीवो मोक्षमार्गको देनेवाले तथा बतानेवाले ऐसे सद्गुरु महाराज उवकेशगच्छिया रत्नप्रभसुरिजि महाराजको शुद्धदिले पांचो हि पदधरो के चरणकमलोकों द्रव्य भावसें पूजन करके अपना जन्म सफल करो। युग प्रधानोके गुण जैसा ग्रन्थोमें लिखा है वैसा लिखते है। दुःख और कष्टकों दूर करे। लक्ष्मी वा पुत्रादि कामना पूरण कर। विद्यासिद्धि, देवसिद्धि वचनसिद्धि और पचाचार पालनेवाले ऐसे युगप्रधान दो हज्जार च्यार पूर्वोक्त कुलमें होणा है। एसा वीरप्रभु कह गए है। जो प्रतिबोधके श्रावकधर्म बढावे इत्यलम्.

वांचनेवाले विद्वानोसें तथा श्रावकोंसें निवेदन हैं कि जो कोइ भी दृष्टि दोष रहा हो–उसें क्षमा करें, और सुधार लेवें।

आपका शुभचिंतक उपकेश गच्छिया शुभकर्ण यति। समाप्त॥

स्थान लश्कर. गवालियर. सराफा॥

संवत् १९७२ द्वितीय वैशाख अक्षय तृतीया॥

श्रीजिनाय नमः

दादाजी श्रीरत्नप्रभसूरिआदि गुरुवरोंकी

अष्टप्रकारी पूजा

विधि–प्रथमस्नात्रीया श्रीफल–नाणा यथा-शक्ति हाथमें लेके खडा रहै । फिर गुरु आह्वानके श्लोक पढके स्थापना सुन्दर पट्टेपर करावे ।

श्लोक–रत्नप्रभान् सूरिगुरून् निधाय
सुरत्नपीठे कनकोज्ज्वलाभान् ।
प्रबोधपुष्टान् तपसा वरिष्ठान्
गुणैर्गरिष्ठान् विमलान् नमामि ॥१॥
समस्तगुणमण्डितान् परमसत्तपस्कान्मुनीन्
शमोपरतिनिष्ठया परमपूज्यपादाम्बुजान् ।
प्रदर्शितनिजप्रभावगतिकार्यसंसाधकान्
हृदब्जकमले तथा रुचिरपीठके स्थापये ॥२॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनरत्नप्रभसूरि–श्रीजिनयक्षदेव सूरि—श्रीजिनसिद्धसूरि–श्रीजिनकक्कसूरि–श्रीजिन-

देवगुप्तसूरिगुरो ! अत्र अवतर अवतर स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनरत्नप्रभसूरिगुरो ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा इति प्रतिष्ठापनम् ॥ २ ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनरत्नप्रभसूरिगुरो ! अत्र मम संनिहितो भव वषट् ! इति सन्निहितकरणम् ॥ ३ ॥

अथ स्तवनाप्रारम्भः

अब कलश लेके स्नात्रीया खडा होवे—

दुहा—अर्हन सिद्ध सूरीश्वरा, पाठकमुनिगुणवंत ।
ए सेवे किल विष टलै, भाजे कुमति कुपन्थ ॥१॥
श्रीजिनपासजिनन्दसें, शोभित छठे पाट ।
रत्नसूरि पद सेवतां, होय सुचंगा ठाट ॥२॥
दस-चतुर-पुरव श्रुतिधरा, रत्नसूरि भये स्वाम ।
भूमणि दिनकर तुल्यसम, अमर रटे गुणग्राम ॥३॥
पद्मा-अम्बा-सिद्धादिका, बहुदेवी सुर साथ ।
पूजे स्वयंप्रभसूरि पद, करजोरें धर माथ ॥४॥
श्रीश्रीमाल स्वयंप्रभु-कीने अरु पोरवाड ।
चरम जिनेसर आंतरे-पहोंच्या स्वर्ग मजार ॥५॥
त्रयलख श्रावक एकसम-चोराशी हजार ।
रत्नप्रभसूरिकिये, मिथ्याताप विडार. ॥ ६ ॥

गोत्र अठारे स्थापकर, विचरे महीयल सूर।
इनमें सें शाखा चली, अनगिनती भरपूर ॥७॥
दुःख दोहग दूरि किया, पूरि भविजन आस।
ऐसे सत्गुरु प्रणमतां, पावै लीलविलास. ॥ ८ ॥
तिनके पाट कलानिधि, यक्षसूरि भये स्वाम।
प्रतिबोधे श्रावकबहुत, पाम्या सुख अभिराम ॥९॥
सिद्धसूरि सिद्धसम भये, तीजे पाट विशाल।
शास्त्र रचे बहु अर्थरस, वाणी अमिय रसाल ॥१०॥
कक्कसूरि तिन पाटपे, कारज सारे अनेक।
कुमति कुपन्थ हटायके, कीना जैन विवेक ॥११॥
देवगुप्ति भये देवसम, देव्यां पूजे पाय।
पूजे भविजन भावसें, पातिक दूर पलाय ॥१२॥
ये गुरु नामें ओलखे, ये गुरु सेवै पाय।
ये गुरु पूजै भावसें, दुःख-अरि दूर पलाय ॥१३॥
गंधोदक जल शुद्धसें, जो पूजे गुरुराय।
मोह मदादिक दूरहो, पावै लच्छी अथाह ॥१४॥

अथ प्रथमजलपूजाप्रारम्भः

ढाल—पहली.

श्रीसिद्धचक्र आराधो, मनवंछित कारज साधोरे भवियों ए देशी ॥
तथा काफी—आशावरी रागेण गीयते ॥

सद्गुरु चरन पखालों। मनसुध पूजनने चालोरे

भवियां। ए आंकडी ॥ प्रभुरत्नसूरि गुणवंता जिन-गुण पाया ना अंतारे भवियां ॥ सद्गुरु० ॥ १ ॥ प्रभुरत्नसूरि सुखकारी, सबजीवनके उपकारीरे भवियां। सद्गुरु० ॥२॥ प्रभुरत्नसूरि नितपूजै,पापसन्ताप सु ध्रुजैरे भवियां। सद्गुरु० ॥ ३ ॥ प्रभुरत्नसूरि सुख दाया, गढ ओएश सुं आयारे भवियां। सद्गुरु० ॥ ४ ॥ प्रभुरत्नसूरि उपदेश सुनावै। पद्मा-अम्ब-सिद्धादिका आवेरे भवियां। सद्गुरु० ॥ ५ ॥ प्रभु मास संलेखना लीनी। साचलनें विनती कीनीरे भवियां सद्गुरु० ॥ ६ ॥ प्रभु मास चोमासे ठहरो। लाभ हुवै अति गहरोरे भवियां। सद्गुरु० ॥ ७ ॥ प्रभु उहडपुत्र जीवायो। नगर भेलो हुय आयोरे भवियां। सद्गुरु० ॥ ८ ॥ प्रभुसेवै उपलदे राजा। मनका संशय भाजारे भवियां। सद्गुरु० ॥ ९ ॥ प्रभु बारे व्रत उचरावे। नगरी सब श्रावक कहलावैरे भवियां। सद्गुरु० ॥ १० ॥ प्रभु ओएश वंश स्थाप्यो। मिथ्यातम जडसें काप्योरे भवियां। सद्गुरु० ॥ ११ ॥ प्रभु चरन शरनकी आशा। ध्यो शुभकरण सुवासारे भवियां। सद्गुरु ॥ १२ ॥

काव्य.

शुभस्वर्धुनीवारिपुण्यप्रवाह
प्रमृष्टे प्रकृष्टे सदा लोकजुष्टे।

सदा पापतापापहेऽभीष्टदेहम् ।
गुरूणां पदाब्जे भजे भङ्गलाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनरत्नप्रभसूरीश्वराय, श्रीजिनयक्षदेवसूरीश्वराय, श्रीजिनसिद्धसूरीश्वराय, श्रीजिनकक्कसूरीश्वराय, श्रीजिनदेवगुप्तसूरीश्वराय, देवान् प्रतिबोधकाय, मिथ्यात्वविद्धंसकाय, ओएशवंशस्थापकाय, जलं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ १ ॥

अथ द्वितीयचन्दनपूजाप्रारम्भः

दुहा.

चंदन मृगमद काश्मरीं, घसीं घनसार सुं भेल ।
जो चरचे गुरु चरनपें, लहै सुरंगा खेल ॥ १ ॥

ढाल दूसरी.

विमलगिरि डग धरीए। ए देशी ।

सद्गुरु पूजन करिए सुघडजन । ए आंकडी । पूजा करतकटै भवफंदा । भव भव पातिक कटरिये. सुघडजन । सद्गुरु० ॥१॥ तीन लाख अरु सहस चोरासी । श्रावक गुरुगढ करिये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ २ ॥ एकदिवस ऊहडदे श्रावक । करजोरे पद परियें सुघडजन । सद्गुरु० ॥ ३ ॥ नाम नारायण देहरो बनाउं । दिवस बने निशि परियें । सुघडजन

सद्गुरु० ॥ ४ ॥ ये बिनति सुन श्रावककी । सद्गुरु वयण उचरिये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ ५ ॥ वीर नामसें देहरो बनावो । नाथ ठवि सुखभरिये सुघडजन सद्गुरु० ॥ ६ ॥ देवी चामुंडा बिम्ब बनावे । वेलु दुग्धसें धरीये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ ७ ॥ हर्षसें पुछै संघ प्रभुसें । बिंब कहां शुभ धरियें सुघडजन । सद्गुरु० ॥ ८ ॥ ये सुन सद्गुरु बोले वाणी । बिंब साचलदे करिये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ ९ ॥ संघ कहे हम तुरत बतावो । ये इच्छा उर धरीये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ १० ॥ देर आभिहे सात दिवसकी । जलदि ना श्रावक करिये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ ११ ॥ करजोरे पुनःशीशनमावै । सब श्रावक पग परिये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ १२ ॥ दरस करावो वीर प्रभुको । हय–गय–रथसुं उवरिये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ १३ ॥ सद्गुरु संघ सकलसब मिलकर । वरघोडे लेउ विचरिये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ १४ ॥ शुभ सम मुहूरत प्रभुकुं काढे । नाटक–नृत्य विस्तरिये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ १५ ॥ कोटि सोनैया दान जो देके । निछरावलमाणि करिये सुघडजन । सद्गुरु० ॥ १६ ॥ मनसुध भावे भावत याविध । बाह्य मंडपमें धरिये । सुघडजन । सद्गुरु० ॥ १७ ॥ करण कहे शुभ

केसरपूजा । पूजनसें भवतरीये सुघडजन । सद्-गुरु० ॥ १८ ॥

काव्य.

मलयचन्दनकुङ्कुमवारिणा.
निखिलजाड्यरुजातपहारिणा ।
बहुलगन्धपरम्परया युतं
रचितमर्च्यत ईशपदाम्बुजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनरत्नप्रभुसूरीश्वराय, श्री-जिनयक्षदेवसूरीश्वराय, श्रीजिनसिद्धसूरीश्वराय, श्रीजिनकक्कसूरीश्वराय, श्रीजिनदेवगुप्तसूरीश्वराय देवान् प्रतिबोधकाय, मिथ्यात्वविध्वंसकाय, ओए-शवंशस्थापकाय चन्दनं निर्वपामि ते ॥स्वाहा२॥

इति द्वितीया चन्दनपूजा संपूर्णा

अथ–तृतीयपुष्पपूजाप्रारम्भः

दूहा.

बेला मरुवा मालती । केतकी जूही गुलाब ।
चंपा चमेली मोगरो । चाढो रूडे भाव ॥ १ ॥

ढाल तिसरी,

सदा भजो ब्रह्मचारी । ए देशी.

सदा पूजो गुरुपाया । भवभय नाश दुरित

विनाश । ए आंकडी । कोरंट श्रावक सबमिल आवे । विनति करै समुदाया हो ॥ भव० ॥ १ ॥ भुवन रच्यो वहां चरमजिनंदको । चलिय तहां गुरुराया हो ॥ भव० ॥ २ ॥ ये सुन सद्गुरु तब युं भाखै । वक्तपे आवे उंमाया हो ॥ भव० ॥ ३ ॥ मूलरूपरख निज ओएस्यां । कोरंटवैक्री सुं धाया हो । भव० ॥४॥ एकसम गुरु दोय भुवनमें । बिंबप्रातिष्ट कराया हो ॥ भव० ॥ ५ ॥ ये देख अचरिज बहुत मिथ्यात्वी । शिष्य भये समुदाया हो ॥ भव० ॥६॥ देवी चांमुडा समकितकीनी । महिष-अजा छुडवाया हो ॥ भव० ॥ ७ ॥ छाणा उपर वासक्षेपसें । धन अगनित दरसाया हो ॥ भव० ॥ ८ ॥ भूप करन गुरु इच्छा कीनी । देवी कहै हरखाया हो ॥ भव० ॥ ९ ॥ वाणिक करो गुरुगोत्रअढारे । साख बढे बहु ताया हो ॥ भव० ॥ १० ॥ ग्राम-नगर-पुर-पाटन विचरे । जहां तहां संघ बनाया हो ॥ भव० ॥ ११ ॥ याग हिंसादिक दूर कराके । श्रावक व्रत उचराया हो ॥ भव० ॥ १२ ॥ जैन मीमांसा कुमति विध्वंसन । नवतत्व वृत्ति रचाया हो ॥ भव० ॥ १३ ॥ बहुत देशकी कुमति हठाके । जैनधर्म झलकाया हो ॥ भव० ॥ १४ ॥ संघ चतुरविध स्थापित करके । श्रीसंघ पद्ध दरसाया हो ॥ भव० ॥ १५ ॥

सिद्धगिरिपर डेढ मासकी। संलेखनाकर सुख पाया हो ॥ भव० ॥ १६ ॥ वरस चोरासी चरमप्रभुसें। माघसुदि सुख पाया हो ॥ भव० ॥ १७ ॥ उपजा द्वादशमें देवलोके। पूर्णा तीथि गुरुराया हो ॥ भव० ॥ १८ ॥ तीजी पूजा विकसकुसुमकी। पूजन कर सुख पाया हो ॥ भव० ॥ १९ ॥ करन कहे मम पातिक भाजे। चरन शरन शुभ आया हो ॥ ॥ भव० ॥ २० ॥

काव्यम्.

मालतीं पाटलीं चैव केतकीसङ्गतोद्भवां।
विकासामोदकुसुम–सन्ततिं निर्वपामि ते ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ.....पुष्पं निर्वपामि ते स्वाहा

इति तृतीया पुष्पपूजा समाप्ता.

अथ–चतुर्थधूपपूजाप्रारम्भः

दूहा.

कृष्णागर मृगमद तगर। सेलारस लोंबान।
जो खेवै गुरुचरनपे। वो लहे सुरपुरस्थान ॥ १ ॥

ढाल चौथी.

सिद्धचक्रपद वन्दो। ए देशी। राग आशावरी रागेण गीयते.

सद्गुरुपद नित वंदोरे भविका। चर्चित होत

आनंदोरे ॥ भविका० स० ॥ राजगृहि सबसंघ मिलकर । विनति पत्र पठावे । बहुतसे श्रीसंघ सामा आवे । गुरु पद शिश झुकावेरे ॥ भविका० स० ॥१॥ करजोरे पुन विनति करत है । संघ उपद्रव टालो यक्ष मानभद्र नित्य सतावे । ताको विंघन निवारोरे ॥ भविका स० ॥ २ ॥ ये सुन विनति सद्गुरु बोले । हम आवे तत्काल । लब्धि संपन्न लब्धिसे पहुंचे । पूर्णभद्र चैत्यालरे ॥ भविका स० ॥ ३ ॥ "नमिऊण" मंत्र गुरु तब भाखे । छांटे जलधर धारा, यक्ष प्रसन्न हों सबसें बोले । ये गुरु मोटो उपगाररे ॥ भविका स० ॥४॥ जीवन छोडे इन चरननसें । मैं हुं चाकर दास । समकित लीनो कुमति हटाके । सेवे गुरु पद खासरे ॥ भविका स० ॥ ५ ॥ जो इन गुरुकी सेवा करेहै । ताके उपद्रव चुरुं । नित नित वित्त सुयश बढावुं । मन इच्छा सब पुरुंरे ॥ भविका० स० ॥ ६ ॥ बहुत उपद्रव शांति कीना । पुर पट्टण विच धामे । ऐसे सद्गुरु अष्टम पाटे । यक्षदेव भये स्वामिरे ॥ भविका० स० ॥ ७ ॥ पाट अठारमें इण गुरुनामें पूर्ण भये गुणवान । पाटनमांहे दीक्षा दिधि । वज्रसेन शिष्य सुच्यारे ॥ भविका० स० ॥ ८ ॥ नागेन्द्र[1]-चन्द्र[2] निवृति[3] विद्याधर । शाखा चतुर गुरु थापे । उपज्या पंचमदेव विमानें । नामसें भाजे तापरे ॥ भवि-

का० स० ॥ ९ ॥ चोथी पूजा धूप सुगंधित । धूप खेयां पूरे आस । करण कहे शुभ सद्गुरु म्हारा । दीजो सुमति सुवास हो—भविका० स० ॥ १० ॥

। काठ्यम् ।

वितीर्णदिक्सुसौरभम् प्रकीर्णमञ्जधूमकम्
दशाङ्गधूपमुज्ज्वलं निवेदयामि रोचकम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ....धूपं निर्वपामि तें स्वाहा.

इति चतुर्थधूपपूजा समाप्ता.

अथ पञ्चमदीपकपूजाप्रारम्भ.

दूहा.

सुरभि घृत संयुक्तसें । वाती सूत्र नवीन
ज्योतहीं दीपक अघ हरे । फैले सुयश भुव तीन ॥१॥

ढाल पांचवी.

रेखता रागेण गीयते.

सुगुरु पद आज में पायो । भांज्यो मिथ्यात्व मोमनको । कलपतरु कलिकालमें देवा । गुरुसम और ना कोइ भाजे मिथ्यात्व चरणनसें । क्षमा सुघ सहजमें होइ ॥ सुगुरु ॥ १ ॥ ओएश गढ बीच लघु श्रावक करै । पूजा जिनंदकी जी । पूरव कक्कसूरि कहि भाख्या । उप-

द्रव होयगा कीजी ॥ सुगुरु ॥ २ ॥ छेदी तन गांठ जिनवरकी । वहीं जद रक्तकी धारा । अनिल सम कोप करे देवी । नगर सब शून्य कर डारा ॥ सुगुरु ॥३॥ गइ जद वात सद्गुरुपे । पादानुलब्धिसें आये कराइ शान्तिविध पूजन । सकलजन देख हरखाये ॥ सुगुरु ॥ ४ ॥ बजा ढक वाद्य घरघरमें । सुहागन गीत मील गावे । वधाइ दे रही गुरुकुं जीवों । युग सहस दुनियामें ॥ सुगुरु ॥ ५ ॥ गुरु झट लेइ संघ आज्ञा । चले अति शीघ्रगामीसें । मुहुर्तपद स्थानपे आये । हुवे लयलीन स्वामीसें ॥ सुगुरु ॥ ६ ॥ धरा पर जैनका डंका । बजा गुरु कक्कसूरिका । हजारों भूपसुरसेवें । भाज्या मिथ्यात्व पूरिका ॥ सुगुरु ॥ ७ ॥ श्रवण करो दासकी विनती । परंपद आपो स्वामिजी चरन रज रोज में मागुं । ये ही सुभ अरजी नामीजी ॥ सुगुरु ॥ ८ ॥

॥ काव्यम् ॥

सुवर्णपात्रसंस्थितैः प्रभाहतान्धकारकैः
सुवर्तिसाज्यदीपकैः प्रदर्शयामि ते पदम् ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ....दीपं निर्वपामि ते । स्वाहा ।

इति पञ्चमी दीपकपूजा समाप्ता.

———

अथ षष्ठाक्षतपूजा पारम्भः

दूहा.

स्वस्तिक विरचे भावसे । चाढे मुक्ता निधान
ताघर कमला आनके । वास करै सत्यजान. ॥१॥

ढाल छट्ठी.

आज आनंद भयो । सद्गुरु चरणसरोज भ्रमरमनमेरो लिपट रह्यो ॥ आंकडी ॥ गुरु तारण तरण जिहाजा । सद्गुरु रखीये मेरि लाजा । मेंहुं अभागी सिरताजा ॥ आज० ॥ १ ॥ में आन पड्यो कारागारा । दुःख मोसें सह्यो नहिं जाय जरा । गुरु करना सुदृष्टि आजभला ॥ आज० ॥ २ ॥ लु लु लु ल सद्गुरु पावां लागुं । कक्क कक्क सूरि नामा भाखुं । दिन रात जपुं हियडे राखुं ॥ ॥ आज० ॥ ३ ॥ में अपराध कीया बहू तेरा सो । सब खमिये सद्गुरुमेरा । संकट काट करो निवेरा ॥ आज० ॥ ४ ॥ नाम जपत चट बेडि टूटी । सात पुडतकी भखसी फुटी । महीपति हाथ जोडे झट उठी आज० ॥ ५ ॥ सोम कहे धन धन गुरु राया । आप गुननके पार न पाया । नामसें भाजे संकट छाया । आज० ॥ ६ ॥ ये चित धार दरसकी ठानी । शंका आंनगि राखलमानी । साचलमात जरा रिसयानी ॥

आज० ॥ ७ ॥ जब सद्गुरु साचलकुं ध्यावे । हाथ जोडकर देवी आवे । गुरु मुखसें युं फुरमावे ॥ आज० ॥ ८ ॥ गुरु मनसा जान जीवावे । करवट ले उठ-सो मा ध्याता । धनगुरु तुम जग विख्याता ॥ आज० ॥ ९ ॥ करण कहे सुभ आशा पुरो । मोह प्रचंडसें करिय दूरो । द्यो गुरु अविचल पद नूरो ॥ आज० ॥ १० ॥

काव्यम्

नानारत्न समाकीर्णानिन्दुकुन्दद्युतीनहम्
श्वेताक्षतान् मृदून् सम्यग् । अर्पयामि शुभावहान

ॐ ह्रीँ श्रीँ....अक्षतं निर्वपामि ते स्वाहा ॥

इति अक्षतपूजा समाप्ता.

अथ सप्तनैवेद्यपूजापारम्भः

दूहा.

मोदक सुंदर नवनवा । पचधारी घृतपूर
चाढे रूडे भावसें । जावे संकट दूर ॥१॥

ढाल सातवीं.

राग केरवा.

सद्गुरु चरणसु मेरे मन वसीया । शैल अचल गुरुराज पधारे । दर्शनकुं संघ आवे उल्हसिया ॥ सद्गुरु

॥ १ ॥ करजोडे पुन विनति करतहैं । लुल लुल लागे पावें फरसिया ॥ सद्गुरु० ॥ २ ॥ बहुत तृषा व्याधि श्रीसंघकुं । चट उठ गुरु पय स्थान दरसिया ॥ सद्गुरु० ॥३॥ डांग इसारे अमिजल निकला । लख यश गावत देत हरसिया ॥ सद्गुरु० ॥ ४ ॥ पीकर नीर हए संघ खुसीमें । जल अगाध विलोकि तरसिया ॥ सद्गुरु० ॥५॥ पंच प्रमाणिक ग्रन्थके कर्त्ता । तरणि प्रकासिक तेज वरसिया ॥ सद्गुरु० ॥ ६ ॥ तर्क सुक्षेत्र समासकी टीका । रच-बहु अर्थ गंभोर दरसीया ॥ सद्गुरु० ॥७॥ दधि सम गुणगण कक्कसूरिके । नामसें भाजे कलुष कुरासिया ॥ सद्गुरु० ॥ ८ ॥ उपज्या पंचम देव विमानें । गावत गुणजन प्रात उल्हसिया ॥ सद्गुरु० ॥ ९ ॥ त्रय चतु पाट सूरि गुरुराया । शासन मंगल सकल वरतिया ॥ सद्गुरु० ॥ १० ॥ धन धन करण कहे शुभ स्वामी । मुज मनमन्दिर तुम गुण वासिया ॥ सद्गुरु० ॥११॥

काव्यम्

प्रभूतभेदभोज्यकै--र्वटैर्यवैस्सुसंस्कृतम्
सुसर्पिपक्वमोदकम् निवेदयामि तुष्टिदम् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं....नैवेद्यं निर्वपामि ते स्वाहा.

इति नैवेद्यपूजासमाप्ता.

अथ अष्टमफलपूजाप्रारम्भः

दूहा.

फल ढौके पातिकगले । नूतन मिष्ट अनूप
पग पग पामें संपदा । निर्धनियां धनरूप ॥ १ ॥

ढाल आठवीं.

श्री राजेण गोयते

गुरुपदपूजा सुरतरु कन्द । धन धन सद्गुरु अतिशय धारी । तेज प्रताप अखंड ॥ गु० ॥ १ ॥ दोय पूरवधर पेंतिस पाटे । विद्या गुण निधि बन्ध ॥ गु० ॥ २ ॥ दैव ऋद्धि गणि इनकने पढिया । डेढ पूरव श्रुति छन्द ॥ गु० ॥ ३ ॥ क्षमाश्रमण पद सद्गुरु दीना । विद्या वकसी गुप्त प्रबन्ध ॥ गु० ॥४॥ आप तखत जिस दिवस विराज्या । थाप्या पाठक पंच ॥ गु० ॥ ५ ॥ बहूत उपद्रव रोग निवार्या । कहेतां न आवे खंच ॥ गु० ॥ ६ ॥ भुवन शंखेश्वर ध्यान करंता । भाखे पद्मावती वंच ॥ गु० ॥७॥ संघ उद्योत कीया जब गुरुने । हटिया कुमति कुपन्थ ॥ गु० ॥ ८ ॥ बहुत मिथ्यात्वी मिथ्या तजके । समकित लीना नन्द ॥ गु० ॥ ९ ॥ भेंसा साहका कुष्ट मिटाया । भाज्या दलिद्र अखंड ॥ गु० ॥ १० ॥ विषापहार लब्धिका धारी । पाटवान नभतेज अखंड ॥ गु० ॥ ११ ॥ सुगुरु मेहरसें भेसा साने । कीना नाम

अखंड ॥ गु० ॥ १२ ॥ घन धन देवगुरु महाराजा। पायो सुर पुर तींज अनन्द ॥ गु० ॥ १३ ॥ करण कहे सुभ आशा पुरो । द्यो गुरु समकितानन्द ॥ गु० ॥ १४ ॥

काव्यम्

सदाम्रजम्बूमोचकैः । श्रियः फलै र्विभूषितम्
सुखर्जुरी–सुकर्कटी–फलोधमर्पयामि ते ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ .... फलं. निर्वपामि ते । स्वाहा.

इति अष्टमी फलपूजा समाप्ता.

अथ नवमवस्त्रपूजाप्रारम्भः

दूहा.

केसवगन्ध संयुक्त सें । उज्ज्वल वस्त्र अनुप
चाढे सद्गुरु चरणपे । भाजे व्यथा स्वरुप. ॥ १ ॥

ढाल नवमी.

कव्वाली रागेण गीयते.

धन धन सद्गुरु हे महाराज । अनुभव ज्ञान जचाने वाले। नव लख सूरि मंत्रको जाप। जपकर सूरि भये हें आप । नामसें भाजे कुष्ट संताप। आगम पन्थ बताने वाले ॥ धन० ॥ १ ॥ गुर्जर देश

रोग अति भारी। ता पर कोप्या देव विकारी। दुःखि भये सबहि नर नारी। भागके जान बचाने वाले ॥ धन० ॥ २ ॥ सुनके सिद्धसूरिका नाम। चलके आये संघ तमाम। बिनति वंदन करे अति गाम। भवोदधि पार लगाने वाले ॥ धन० ॥ ३ ॥ सुगुरु कहे संघ क्युं धबरावे। इति उपद्रव तुरत नसावे। चइत्ता भार पाठ बतावे। तत्क्षण फंद हटाने वाले ॥ धन० ॥ ४ ॥ सद्गुरु वासक्षेप जिहां डाले। रोग उपद्रव तुरत पुलावे। खुस हो के श्रीसंघ घर जावे। गुरुसें नेह बढानें वाले ॥ धन० ॥ ५ ॥ पुनम दिवसे संथारा करके। उपजे सुरपुर चोथे विचरके। संघ करे भाक्ति बहु घरकें। सुभकुं दरस दिखानें वाले ॥ धन० ॥ ६ ॥

॥ काव्यम् ॥

सकलभुवनलज्जावारणं सदृशाकं
मद्गुरुचिरसुगन्धं कुन्दचन्द्रप्रकाशम्
विमलशुचि सुधौतं प्रांशु दीर्घं सुवर्णं
वसनमिदममौलं सुन्दरं ते ददामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ .... वस्त्रं निर्वपामि ते स्वाहा.

॥ इति नवमी वस्त्रपूजा समाप्ता. ॥

———

अथ दशमध्वजपूजाप्रारम्भः

दूहा.

कनक रजत ध्वज दंडमय ।
पंच वरण ध्वजपुर
मृदु समिर लयके गगन ।
देखत अरि वसु दूर ॥ १ ॥।

ढाल दशमी.

ख्यालकी चालमें.

सरनें आया की लजा राख ल्यो सद्गुरुजी मारा । ए आंकडी । सिंधुदेश मुलतान नगरमें । मुगल बडे उत्पाती। जाको देखे तिलक लगाया। जव वन आंन मिटातेजी ॥ स० ॥ १ ॥ बहुत उपद्रव संघकुं दीना। दुःखी हुए नर नारी। मिलकर संघ गुरुपेआया। विनति करे अति भारीजी ॥स० ॥ २ ॥ लाहोर नगर साहका लडका। मृतक हुवा उस बारी सुनकर नामें गुरुपे आया। लास धरी इणवारी जी ॥ स० ॥३॥ दृष्टि मात्रसें तुरत जिवाया। उठा पुत्र तत्काल। सोगन लीना मदिरा मांसका। पुत सहित पातसाहजी ॥ स० ॥ ४ ॥ रोग उपद्रव तुरत भंजाया। यवन दुःख सब रोका। श्री संघ साथे आये कानन। नदी तीर तप कीधा जी ॥ स० ॥ ५ ॥

अष्टम भक्तकी करी तपस्या। पद्मा साचल आइ। सरिता तटपे मूर्ति बताइ। सर्व धात सुखदाइजी ॥ स० ॥ ६ ॥ श्री ऋषहेसर स्तुति करके। काढी मूर्ति पयाल। तिनका स्नात्र कराके सद्गुरु। छांय नगरमें हालजी ॥ स० ॥ ७ ॥ भजा उपद्रव हाल मारिका। खुसी हुए नरनारी। मुलतान शहेरमें महिमा केलि। जैन धर्मकी भारिजी ॥ स० ॥ ८ ॥ चतु मुनि पाट सूरि युगराया। सिद्धसूरि महाराज लाहोर अंदर सब जन पूजै। सिद्धगुरु सुभ आजजी ॥ स० ॥ ९ ॥

काव्यम्.

नानावाद्यनिनादकैः सुखकरै र्गन्धर्वलीलायितम्
सौधैर्लेपविशेषकैस्सुरभिभिर्वारिप्रवाहैर्मुदा
सद्वस्त्रादिविचित्ररत्नराचितैः सौगन्धसन्दोहकै
र्युक्तं श्रीगृहमीदृशं तदुपरिच्छत्रध्वजे स्थापये ॥१॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ. ध्वजां निर्वपामि ते स्वाहा इति
इति दशमी ध्वजपूजा समाप्ता ॥

कलश.

(रागधन्यासरी)

सुगुरु तेरो तेज दिवाकर छाजे। पार्श्व प्रभुके निज सन्तानी। रत्नप्रभु सूरिराज। तिनके गूण

माणि भूमें पसरे । नाम सुनत अघ भाजे ॥ सु० ॥ १ ॥ उपकेश गच्छ विद्याधर शाखा । कमला बिरुद सुछाजै । तिनके पाट पाटानुक्रमसें । देवं गुप्तसूरिराज सु०॥२॥ तिनकें शिष्य पाठक पद सोहे । भामसुन्दर गूरुराज । ताके शिष्य कल्यानसुन्दरमुनि । पाठक बिरुद समाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ लब्धिसुन्दर तिनके पदसेवक । नाम लेवत होय काज । तिनके शिष्य पाठक पद उत्तम । खुश्यालसुन्दर महाराज ॥ सु० ॥४॥ माता साचल जाय मनाइ । सकल गूणि शिरताज । देश देशके भूप नमाये । गावत गूण गौरी आज ॥ सु० ॥५॥ वखत सुन्दर लघुकनक किरति मुनि । गणिपद पेटी सुसाज । तिनकें शिष्य विद्यागुण पूरण । लक्ष्मीसुन्दर कविराज ॥ सु० ॥ ६ ॥ भवानीसुन्दर तिनके लघु भ्राता । पंडित शीलविराज । नेमसुन्दर अनुज न्यालसुन्दर गणि । किरति चहुं दिस गाज ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिनके चरण कज सेवक नायक । सुन्दरगणि अति छाजे । तिनके शिष्य गितारथ पंडित । विवेकसुन्दर गणिराज ॥ सु० ॥८॥ तास चरन रज सुमति सुन्दर वर । पूजा रचि सुख आज । संवत् शशि नव रस ग्रह (१९६८) फागण । चोथ वदि सुसमाजे ॥ सु० ॥ ९ ॥ संध्या लश्कर

---

१ पाठान्तरे ककसूरि गुरुराज ।

माधव राज्ये। स्त्राफ बजारमें गाजे। सद्गुरु पूजा प्रेमसें कीनी। शुभकरण कहे आज ॥ सु० ॥ १० ॥

इति सुगुरुमहाराज दादाजी रत्नप्रभसूरि आदि गुरुवरोंकी बृहत्पूजा शुभकर्णयतिकृता संपूर्णा ॥

आरति.

जय गुरु हितकारा। आरति मंगलचारा। सब जन सुखकारा॥ प्रथम आरति **रत्नप्रभुकी**। धर्मधुरंधर धीरा। शासन नायक जग गुरु स्वामी। शिव रमणी वरवीरा॥ जय० ॥ १ ॥ द्वितीय आरति **यक्षगुरुकी**। टाले संकट रोगा। निर्धनीयांकुं भूप करत है। आपे अविचल भोगा॥ जय० ॥२॥ तृतीय आरति **देवगुरुकी**। वन्ध्या पुत्रको पामे। कारज सारे जगके स्वामी। मनवांछित हो काम॥ जय० ॥ ३ ॥ तूर्य आरति **सिद्धगुरुकी**। जावै कुमति मोहा। ध्यान करंता सुमति आवे। लोहा कंचन होवे॥ जय० ॥४॥ पंचमी आरति **कक्कगुरुकी**। कर्म हटावे सारा। आवागमनसें दूर करत है। ऐसे सद्गुरु म्हारा॥ जय० ॥ ५ ॥ **करण** कहै शुभ सद्गुरु पदको। नित नमुं कर जोडा। भव भव व्याधि मेटो हमारी। आपो अनुभव तोरा॥ जय० ॥ ६ ॥

॥ पंच पाटकी आरति संपूर्णा ॥

आरति.

जय जय आरति सुगुरु तुमारी। तोरा चरन कमल जाउं बलिहारी। महेन्द्र चूड–लक्ष्मीवती नन्दा। वदन कमल मुख पूनमचन्दा॥ जय० ॥ १ ॥ सात हाथ तनु सोवन काया। ले दीक्षा गुरु धर्म दीपाया। जय० ॥ २ ॥ तुम गुण पुरन तुम गुण हंसा। विद्याधर कुल

उत्तम वंसा ॥ जय० ॥ ३ ॥ केशि गणधर पाट उजारा । रत्नप्रभ सूरि नाम तुम्हारा ॥ जय० ॥ ४ ॥ देवी चामुंडा समकित कीनी । सुगुरु चरण रज लुलु लुल लीनी ॥ जय० ॥ ५ ॥ पद्मा-अम्बा यक्षादिका देवी । सुर मुनि भूपति करत है सेवा ॥ जय० ॥ ६ ॥ इक अवतारी कारज सिद्धा । बारमा सुर सुख भोगें न चिन्ता ॥ जय० ॥ ७ ॥ जो कोइ आरति करे करावे । मन इच्छा फल तुरते पावे ॥ जय० ॥ ८ ॥ करण कहत शुभ सद्गुरु नामी । तुम पद सेवा दीजै स्वामी ॥ जय० ॥ ९ ॥

॥ इति दादाजी रत्नप्रभसूरीणां आरात्रिका संपूर्णा ॥

सुगुरु महाराजकी लघुपूजा प्रारंभ.

जलपूजा.

शुभस्वर्धुनीवारिपुण्य प्रवाह—प्रमृष्टे प्रकृष्टे सदा लोकजुष्टे ।
सदा पापतापापहेऽभीष्टदेऽहं गुरुणां पदाब्जे भजे मङ्गलाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीरत्नप्रभसूरीश्वराय, जन्मजरामृत्युनिवारणाय, जलं यजामहे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥

चन्दनपूजा. ॥ २ ॥

मलयचन्दन कुङ्कुमवारिणा । निखिलजाड्यरुजातपहारिणा
बहुलगन्धपरम्परया युतं । रचितमर्प्यत ईशपदाम्बुजे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ.....चन्दनं यजामहे । स्वाहा ॥ २ ॥

पूष्पपूजा. ॥ ३ ॥

मालतीं पाटलीं चैव केतकीं यदृतूद्भव
विकासामोदकुसुमसन्ततिं निर्वपामि ते ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ....पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

धूपपूजा. ॥ ४ ॥

वितीर्णदिक्सुसौरभं प्रकीर्णमञ्जधूमकम् ।
दशाङ्गधूपमुज्ज्वलं निवेदयामि रोचकम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ.....धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

दीपकपूजा. ॥५॥

सुवर्णपात्रसंस्थितैः प्रभाहतान्धकारकैः
सुवर्तिसाज्यदीपकैः प्रदर्शयामि ते पदम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ...दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

अक्षतपूजा. ॥ ६ ॥

नानारत्नसमाकीर्णा–निन्दुकुन्दद्युतीनहम्
श्वेताक्षतान्मृदुन्सम्यग् अर्पयामि शुभावहान् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ....अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

नैवेद्यपूजा. ॥ ७ ॥

प्रभूतभेदभोज्यकै–र्वटैर्यवैस्सुसंस्कृतम्
सुसर्पिषक्वमोदकं निवेदयामि तुष्टिदम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ...नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

फलपूजा. ॥ ८ ॥

सदाम्रजम्बूमोचकैः श्रियः फलैर्विभूषितम्
सुखर्जुरीं सुकर्कटीं फलौघमर्पयामि ते ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ....फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

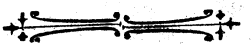

ॐ

बांचीए बांचीए

प्राचीन तीर्थ ओशीयाजी.

ओसवाल भाइओंकी उत्पत्तिका स्थान ओशीया नगरी पूर्वकालमें महा समृद्धिसें भरपूर थी जहांपर देव प्रभु के मंदिर और सचिया देवीका मंदीर बहुत और बडा प्रभावशाली त्रिखंड पृथ्वीमें भव्यतासें प्र यह तीर्थ फलौधी निवासी श्री संघकी देखरेखसे बहुत जैन भाइओंकी सहायतासें देवविमान तुल्य बि हो रहा है. यह तीर्थकी यात्रा करने लायक है. ऐसे किक और बडाही चमत्कारीक दीव्य तीर्थ भूमंडल चित् दृष्टिगोचर होते है. महान् पुन्यके उदय होने तीर्थकी यात्रा करनेके लीए मनुष्य भाग्यशाली हो जोधपुरसे ओशीया और वहांसे फलौधि तक रेल बन है. इसीसे यात्रा करनेको जोसकी इच्छा होवे उसीको भी प्रकारकी तकलीफ नही है.

निवेदक.

शेठ जोगराजजी बेद फलौधी.

ॐ अर्हम् नमः ।
श्री जयविजयजी ज्ञान मंदिर